स्री दे। चौरादिक म्रसुक्तमणा इति भाषा। प्रणीयते प्राणायः (eine Randglosse: प्रथमस्वरादिः)। प्राणायो निष्कामा समतः। इति वणि निपात्यते।
Vgl. Pânini III. 1. 128. — 25. Schol. प्रभविद्युरिप।

Str. 493, 35 Calc. Ausg. Hari, die Scholien wie wir.

Str. 494, 37. Die Scholien: तङ्घाकरे। प्रि। — 39. Die Scholien: तञ्ज तङ्घालाद्यस्विरितात्ता एकार्था इत्येके।

Str. 495, 43. Calc. Ausg. und D मनुगामीना, die Scholien wie wir. — 44. Calc. Ausg. und D मत्यात्रका, die Scholien wie wir.

Str. 496, 45. Die Scholien: म्रनुगा ऽपि 1

Str. 497, 48. Die Scholien: उपासनापि । पर्येषणापि । — Calc. Ausg. परिष्टप: ।

Str. 498, 52. Die Scholien: म्राग्रेग्रिप। — Calc. Ausg. und D. गिम st. गम, die Scholien wie wir.

Str. 499, 54. Calc. Ausg. म्रागत्। — Dies. und E. प्रदूर्णा, B. प्रदूर्णा, D. प्रायुका, die Scholien wie wir. — Dieselben: म्रातिथ्या प्रि। — 55. Calc. Ausg. B. D. प्रायूणिक, die Scholien wie wir.

Str. 501, 62. = ग्रामवासिन, Schol.

Scholien: उद्यति वधू: मितातिरापि । — 69. Calc. Ausg. बधू:, die

BENT PRE PRINT.

Str. 507, 77. Schol. वरारोहा वर्विर्धानी मत्तगामिनी प्रतीपदर्शनी-त्याद्यः शब्दा म्रत्राभ्यूह्याः। — 78. Die Scholien: तेन मानिनी लोला-वती स्मर्वतीत्यादीनि नामानि भवति । म्रादिग्रहणाद्यनेविलासाद-यः। — 79. Da die Erklärungen des Scholiasten bei den hier